मध्य प्रदेश के भिण्ड जिले के जैन मतावलंबियों की धार्मिक मान्यताएं

डॉ० राजीव मिश्रा* एवं डॉ० (श्रीमती) कुंजा मिश्रा*

यह बात स्मरणीय है कि भारत वर्ष में जब जैन धर्म के प्रवर्तक महावीर स्वामी और बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध का जन्म हुआ तो उस समय संसार के दूसरे देशों में कई एक धार्मिक सुधारकों का प्रादुर्भाव हुआ जैसे ईरान में जरथुस्त्र (जौराष्ट्रर), चीन में कन्फ्यूशियस और लाओं–सी और यूनान में हिराक्लिटस आदि, इसलिए ईसा पूर्व छठी शताब्दी का संसार के इतिहास में बड़ा महत्व है। ऐतिहासिक दृष्टि से जैन धर्म विजेताओं का धर्म कहा गया है। ऐतिहासिकता तो यह कहती है कि जैन धर्म में चौबीस तीर्थकर हुए और महावीर स्वामी अंतिम (चौबीसवें) तीर्थंकर है। माना कि ऋषभदेव जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर माने जाते है पर उन्हें जैन धर्म का संस्थापक नहीं कहा जा सकता, जैन धर्म के संस्थापक तो महावीर स्वामी ही है।

जैन धर्म के अनुसार विश्व शाश्वत है। इसका अस्तित्व असंख्य चक्रों में विभाजित है, प्रत्येक चक्र में दो अवधियाँ होती है एक 'उत्सर्पिणी' विकास की अवधि तथा दूसरी 'अवसर्पिणी' ह्रास की अवधि। प्रत्येक अवधि समस्त उद्देश्यों में अपनी पूर्ववर्ती अवधि के समान होती है जिसमें चौबीस तीर्थंकर, बारह चक्रवर्ती सब मिलाकर तिरेसठ श्लाका पुरूष (महान् व्यक्ति) होते है जो नियमित मध्यान्तरों पर चक्र में निवास करते है शैरवरीय समाज में मनुष्यों के आकार वृहद होते हैं और उन्हें अपार आयु का जीवन प्राप्त होता है। उन्हें नियम और सम्पत्ति की कोई आवश्यकता नहीं होती क्योंकि कल्पवृक्ष उनकी याचना पर उनकी समस्त आवश्यकता की पूर्ति करता है। जैन मुनियों का जीवन पाँच संकल्पों पर आधारित है सत्य,अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य। इन पाँचों संकल्पों की बड़ी कठोर व्याख्या है। जैन दर्शन में कैवल्य या मोक्ष की प्राप्ति के लिए तीन साधन बताये गये हैं– (1) सम्यक् ज्ञान (2) सम्यक् दर्शन (3) सम्यक चरित्र। ये त्रिरत्न कहलाते हैं। सम्यक् ज्ञान का अर्थ सच्चा और पूरा ज्ञान, सम्यक् दर्शन का अर्थ तीर्थंकरों में पूरा विश्वास सम्यक् चरित्र का अर्थ नैतिक सदाचारमय जीवन है। जैन ग्रंथों में तपस्या दो प्रकार की बतायी गई है– (1) बाह्य (2) अभ्यान्तर। बाह्य में अनशन अवमोदरिका (चान्द्रायण व्रत), भिक्षाचर्या, रस परित्याग, कायक्लेश और संलीनता (शरीर–सेवा) तथा अभ्यान्तर में प्रायश्चित, विनय, वैयावृत्य (सेवा), स्वाध्याय ध्यान और व्युत्सर्ग (शरीर–त्याग) सम्मिलित है।

भिण्ड जिला भारतवर्ष के मध्यवर्ती राज्य मध्य प्रदेश के उत्तर पश्चिम में स्थित है। प्राचीनकाल से ही यह जिला ऐतिहासिक धरोहरों से परिपूर्ण रहा है। भ्रमण परम्परा के प्रतीक एवं ज्ञान वैराग्य के प्रेरक स्थल तीर्थक्षेत्र ही रहे हैं। भारतीय संस्कृति की प्राचीनता और गरिमा का आधार जैन संस्कृति में विद्यमान है। हिन्दी साहित्य सृजन के सर्वप्रथम चरण में जैन साहित्य आधारभूत माना जाता है। संस्कृति, सभ्यता तथा साहित्य की खोज एवं शोध मूलस्त्रोतों में जैन तीर्थ का अपना अलग स्थान है। भारत–वसुंधरा पर विभिन्न प्रांतों में जैन तीर्थ पवित्र जीवन के प्रबल प्रेरक जीवन्त स्थल है। ये तीर्थस्थल भौतिक पर्यावरण से दुखी,

* जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)।

शांति के उपासकों के लिये आधार केन्द्र है। अधिकांश जैन तीर्थ शहरी चकाचौंध और भीड़भाड़ से दूर एकान्त एवं शांत प्रक्षेत्रों में स्थित है।

भिण्ड जिले में वैसे तो बहुत से प्राचीन दिगम्बर जैन जिनालय हैं किन्तु तीर्थों की गणना में प्रमुख तीन ही स्थान आते हैं– (1) बरही, (2) बरासों, (3) पावई। दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्रों को विभिन्न नामों से जाना जाता है।

तीर्थक्षेत्र – जहाँ से तीर्थंकर मोक्ष को गमन करते हैं।
सिद्धतीर्थ क्षेत्र – जहाँ से मुनि एवं सिद्ध पुरूष मोक्ष को जाते हैं।
अतिशय क्षेत्र – जो क्षेत्र चमत्कारिक प्रसंगों के नाम से जाने जाते हैं।

भिण्ड जिले के सभी तीर्थक्षेत्र अतिशय क्षेत्रों की श्रेणी में आते हैं। प्रमुख जैन मंदिरों का विवरण इस प्रकार है :

1. जैन मंदिर, बरासो (अतिशय क्षेत्र)

भिण्ड नगर से पश्चिम–दक्षिण दिशा में लगभग 10 कि.मी. की दूरी पर बरासों गाँव स्थित है, जिसके पास में बेसली नदी पड़ती है। बेसली नदी के किनारे प्राचीन जैन मंदिर बना हुआ है। यह मंदिर बहुत प्राचीन बताया जाता है। बरासो गाँव अतिशय क्षेत्र (समवशरण क्षेत्र) बताया जाता है। आज से 2500 वर्ष पूर्व भगवान महावीर का समवशरण यहाँ पर कुछ समय के लिये रूका था। जिस स्थान पर समवशरण रूका उसी स्थान पर बेसली नदी के किनारे मंदिर का निर्माण कराया गया। इस मंदिर में भगवान महावीर की प्रतिमा स्थापित है। मटमैले पत्थर पर उत्कीर्ण यह प्रतिमा भव्याकर्षक है। डेढ़ फुट ऊँची यह प्रतिमा पद्मासन मुद्रा में मंदिर सतह से चार फुट ऊँची वेदी पर स्थित है जिसके अगल–बगल दो अन्य प्रतिमाएँ भी रखी हुई हैं। जैन तीर्थंकरों की लगभग 20 प्रतिमाएँ रखी हुई हैं जिसमें से एक 11 वीं सदी के मध्य की है। इन प्रतिमाओं पर छोटे–छोटे लेख तथा तिथियाँ भी लिखी हुई हैं।

गाँव से दक्षिण में स्थित मंदिर एक ऊँचे पठारनुमा टीले पर किले जैसा बना है जो पृथ्वी तल से लगभग 20 फीट ऊँचा है। सीढ़ियों द्वारा चढ़कर मंदिर के मैदान में पहुँचते हैं जो 20 फीट चौड़ा और 40 फीट लम्बा होगा। मैदान के बाद मंदिर की प्राचीर पार कर आँगन में पहुँचते हैं जिसके चारों ओर बराण्डा है। आँगन पार कर बरान्डा के बाद गर्भगृह है जो 2020 वर्गफुट का होगा। गर्भगृह तक कगार से बचाने की दृष्टि से पत्थरों की दीवाल है। पतली ईंट और चूना से निर्मित इस मंदिर के निर्माण के बारे में जनश्रुति है कि यह देवों द्वारा बनवाया गया है। क्वार वदी दौज को प्रतिवर्ष यहाँ मेला भरता है जिसमें दूरदूर से जैन जन सम्मिलित होते हैं।

गाँव के पास ही नया जैन मंदिर है। यह भव्य और विशाल जैन मंदिर दो मंजिला है। इस मंदिर की पूर्व से पश्चिम की लंबाई दो सौ पचास फीट तथा चौड़ाई उत्तर से दक्षिण तीन सौ पच्चीस फीट है। पाँच फीट चौड़ी ईंट–चूना से निर्मित इस मंदिर की दीवालें बहुत मजबूत हैं। मंदिर में संगमरमर की फर्सी का उपयोग किया गया है। बीस फीट लम्बी और चार फुट ऊँची परिक्रमा वाली वेदी पर भगवान महावीर की काले पत्थर पर उत्कीर्ण भव्याकर्षक मूर्ति स्थापित है। इतनी बड़ी वेदी अन्य मंदिरों में नहीं देखी जाती है।

बुन्देलखण्ड के चन्देल राजाओं के समय में 10वीं और 11 वीं शताब्दी में वास्तुविद्या की एक महान शैली प्रस्फुटित हुई थी। खजुराहो के मंदिर में यही शैली दृष्टिगोचर होती है। मध्यभारत के जैन मंदिरों में इसी शैली का प्रयोग किया गया। बरासों और बरही दोनों ही मध्यकालीन मंदिर हैं। वास्तुविद्या की दृष्टि से दोनों मंदिरों का बड़ा भारी महत्व है। मंदिर ऊँचे पर्वतों पर निर्मित होते थे और उनमें से सामान्यतः एक देवालय और एक कक्ष मात्र होता था। देवालय का ऊपरी शिखर खजुराहो के समान अनेक छोटी–छोटी मीनारों से अलंकृत रहता था। मूर्तिकारों द्वारा घुमावदार सीढ़ियाँ बड़ी चतुराई से बनाई गई है। इस प्रकार की सीढ़ियाँ दोनों ही मंदिरों में दिखाई देती है।

2. जैन मंदिर, बरही (अतिशय क्षेत्र)

मध्य प्रदेश के उत्तरी अंचल में उत्तर प्रदेश की सीमा से लगा हुआ चम्बल नदी के किनारे भिण्ड इटावा मार्ग पर भिण्ड से 20 कि.मी. की दूरी पर बरही ग्राम स्थित है। बरही को वल्लवपुर के प्राचीन नाम से भी जाना जाता है ऐसा जैन शास्त्रों में उल्लेख मिलता है। पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से ये क्षेत्र अति महत्वपूर्ण है जिसका निर्माण ढाई हजार वर्षो से अधिक समय का सिद्ध हुआ है। पुरातत्व विभाग द्वारा मंदिर की प्रतिमाएँ 10वीं और 11 वीं शताब्दी की निरूपित की गई है।

जिनालय में मूलनायक द्वितीय तीर्थकर भगवान अजितनाथ की प्रतिमा सम्वत 508 की निर्मित है जो हरित आभा लिये हुये स्वर्णमयी पत्थर पद्मासन स्वरूप में है। यह प्रतिमा चमत्कारिक और मनमोहक है। यह मंदिर दो मंजिला है जिसकी एक मंजिल जमीन के अन्दर बनी हुई है। बरही सिद्ध क्षेत्र है, किंवदन्ती है कि महावीर स्वामी का समवशरण पहले भिण्ड जिले के बरासों गाँव में रूका था फिर चलकर बरही गाँव में आया। समवशरण के रूकने के स्थान पर ही जैनमंदिर की स्थापना की गई। चार फीट मोटाई में ईंट चूना से निर्मित इस मंदिर की सतह पृथ्वी तल से पन्द्रह फीट ऊँची है जिस पर सीढ़ियों से चढ़ते हैं। मंदिर के चारों कोनों पर बुर्ज बने हुये हैं। उत्तर दिशा की ओर खुलने वाले इस मंदिर के मुख्य द्वार से प्रवेश कर भगवान के दर्शनार्थ छतदार कमरा है। मूर्ति के चारों ओर परिक्रमा है।

वंश परम्परा लेखानुसार यहाँ जैन (खरौआ) समाज के लगभग 1400 परिवार रहते थे जो आज संपूर्ण भारतवर्ष के अनेक प्रांतों में जा बसे हैं। ऐसा बतलाते हैं कि 1008 भगवान अजितनाथ का भव्य जिनालय वि.सम्वत 1520 में देवों द्वारा बनाया गया था। यहाँ प्रतिवर्ष अश्विनी कृष्णा सप्तमी को भव्य मेले में रथयात्रा का आयोजन किया जाता है। संपूर्ण भारतवर्ष से जैन समाज एकत्रित होता है। जिनालय का जीर्णोंद्वार कार्य प्रगति पर है एवं इस क्षेत्र की देखरेख पंजीकृत संस्था द्वारा संचालित है। यात्रियों के ठहरने हेतु एक धर्मशाला का निर्माण भी हो रहा है।

3. जैन मंदिर, पावई (अतिशय क्षेत्र)

मूर्ति–वर्ण परिवर्तन के लिये प्रसिद्ध पावई दिगम्बर जैन क्षेत्र अपनी पहचान बनाये हुये हैं। पहला मार्ग जिला मुख्यालय से पश्चिम दिशा की ओर भिण्ड–सुनारपुरा मार्ग पर पिथनपुरा चौराहे से पश्चिम में 3 कि.मी. दूरी पर स्थित ग्राम पावई है। दूसरा मार्ग भिण्ड से मुरलीपुरा होते हुये पिथनपुरा चौराहा पहुँच जाते हैं और वहाँ से पास में ही पावई को मार्ग

जाता है जो मात्र तीन कि.मी. है। तीसरा मार्ग लश्कर रोड पर चलकर 7 कि.मी. दूरी पर पावई मार्ग फूटा है, पहले यह कच्चा मार्ग था अब पक्का बन गया है। यह सबसे सरल और कम दूरी वाला मार्ग है।

शोधकर्ता की भेंट बहन मनोरमा जैन से हुई और उन्होंने जानकारी दी कि ग्राम पावई में भी जैन मंदिर है। यह मंदिर 11 वीं शताब्दी का बना बताया जाता है। मौके पर पहुँचकर शोधकर्ता ने पाया कि यह मंदिर 60–70 फीट की लंबाई चौड़ाई लिये ईंट और चूने के संयोजन से बना है। इस मंदिर की दीवालें 3 फीट चौड़ी और 20 फीट ऊँची है। मंदिर में ही शिखर है जो लगभग 25 फीट ऊँचा है।

मंदिर में मूलनायक की प्रतिमा भूरे पत्थर की पद्मासन मुद्रा वाली भगवान नेमिनाथ की है। इस मनोहारी प्रतिमा का चमत्कारी रूप देखने योग्य है। सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होकर यह प्रतिमा दिन में तीन बार अलग–अलग छटा में दिखती है। प्रातःकाल स्लेटी आभावाली, मध्यकाल भूरी सफेद रंग में एवं सांयकाल हल्की गुलाबी वर्ण की प्रतीत होती है।

इस चमत्कारी आभाओं वाली नेमिनाथ जी की प्रतिमा के दर्शनार्थ आने वालों की संख्या प्रतिवर्ष लगने वाले मेले में बढ़ने लगी है। यहाँ मेला प्रतिवर्ष दीवाली बाद छटवीं को लगता है। यहाँ पर दूरस्थ बड़े छोटे नगरों से श्रृद्धालुजन आते हैं। आस्थावान समर्थ भक्तजन हजारों रूपये दान दे जाते हैं जिनके नाम मंदिर में लगे संगमरमर की पट्टिकाओं में अंकित होते हैं। शेष भक्तजनों के नाम मंदिर से प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं में प्रकाशित होते हैं। दान से प्राप्त आय से मंदिर का जीर्णोद्धार और नव–निर्माण कार्य होता रहता है।

4. जैन मंदिर, रौन

भिण्ड–लहार मार्ग पर मुख्यालय भिण्ड से सिर्फ 35 कि.मी. की दूरी पर रौन कस्बा स्थित है। यहाँ पर तहसील मुख्यालय भी है। ऐतिहासिक दृष्टि से रौन कस्बा बहुत प्राचीन है। इसी कस्बे के बीचोंबीच एक प्राचीन जैन मंदिर है। इसके पास जैनजनों की बस्ती होने से यह जैन मुहल्ला कहलाता है।

पुरानी ककइया और चूने से निर्मित यह मंदिर 30 फीट लम्बा और 30 फीट चौड़ा अवस्थित है। एक विशाल हॉल में जैन मूर्तियाँ रखी गई है। लहार के निकटवर्ती अजनार ग्राम से तेरहवें जैन तीर्थंकर भगवान विमलनाथ की एक भव्य प्रतिमा भूगर्भ से प्राप्त हुई थी जिसकी प्रतिष्ठापना मूर्ति पर अंकित पाद लेख के अनुसार उज्जैयनी नरेश महाराज भोज और महारानी भार्या ने वि. सम्वत 1305 में कराई थी। यह मनोहारी प्रतिमा रौन के जैन मंदिर में विराजमान है। एक अन्य विशाल और भव्य मूर्ति ग्राम इंदुरखी से भी लाकर यहाँ अवस्थित की गई है। इसी मंदिर के पास ही नवीन मंदिर का निर्माण भी कराया गया। भादों मास में प्रतिवर्ष यहाँ जैन सम्मेलन आयोजित किया जाता है जिसमें बाहर से आने वाले जैन जनों के आवास और भोजन आदि की व्यवस्था की जाती है।

उपर्युक्त मंदिरों का भौतिक सत्यापन इस बात का प्रमाण है कि जैन धर्म प्राचीन काल से ही समस्त भिण्ड जिले में फैला हुआ था और जैन समाज बड़े निर्भीक तथा निडर होकर गाँव में भी रह रहे थे। उन्होंने कभी भी नहीं सोचा होगा कि क्षेत्रीय समस्याएँ इतना विकराल

रूप धारण कर लेगी कि गाँव में रहना दूभर हो जायेगा। कालान्तर में समूचा जिला डाकूग्रस्त हो गया, चोर बदमाशों का बोलबाला हो गया तो वे एवं उनके आराध्य देव भी चपेट में आ गए लिहाजा स्थान छोड़ना पड़ा। आज भी भिण्ड जिले में कम से कम तीस हजार जैन निवास करता है, अधिकतर शहर में ही व्यवस्थित है लेकिन ग्रामों में बने हुए उनके विशाल मंदिर प्राचीन गौरव की कहानी दुहरा रहे है।

भिण्ड जिले में अधिकतर दिगम्बर जैन समाज ही निवासरत है। यहाँ वर्ष भर जैन मुनियों के प्रवचन होते रहते है। इन प्रवचनों का प्रभाव सभी समाजों पर स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है जिसके परिणामस्वरूप मानव जीवन अनुशासित एवं संयमित बनता है।

संदर्भ एवं टिप्पणियाँ

1. उग्रसेन जैन के आलेखानुसार – दैनिक उद्‌गार भिण्ड जिला विकास विशेषांक 1993 पृ. 32। प्रधान संपादक– त्रियुगीनारायण शर्मा साधना सदन, 35 झाँसी रोड, भिण्ड (म.प्र.) से प्रकाशित तथा प्रोग्रेसिव ऑफसेट प्रिंटर्स पटना–13 (बिहार) से मुद्रित।
2. डॉ. मुन्नालाल जैन के आलेखानुसार फनकार : काजी तनवीर अभिनंदन ग्रंथ संपादक– पं. सुरेश नीरव डॉ. सुखदेव सिंह सेंगर अ.भा. भाषा साहित्य सम्मेलन, दिल्ली शाखा (भारत) प्रथम संस्करण 15 अगस्त 2000।
3. मनोरमा जैन के आलेखानुसार लेख–दैनिक भास्कर ग्वालियर समाचार पत्र दिनांक 07.02.1996 में प्रकाशित।
4. रामजीत जैन एडवोकेट– गोलालारे जैन जाति इतिहास पृ. 87 प्रकाशक– मेसर्स लालाराम वीरसेन सर्राफ, सदर बाजार भिण्ड (म.प्र.) प्रथम संस्करण 1995।
5. दिगम्बर जैन समाज का इतिहास–श्री लबेंचु पृ. 61।
6. आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज – दूर नहीं है, मंजिल पृ. 110। संपादक– मुनि विशल्य सागर प्रकाशक– श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ, बताशा बाजार, भिण्ड (म.प्र.) प्रथम संस्करण सन् अंकित नहीं।
7. जी.एल. जैन के आलेखानुसार गौरी सरोवर भिण्ड साप्ताहिक पत्रिका पृ. 25।
8. श्री विजयरामदासजी महाराज अभिनंदन ग्रंथ पृ. 117 संपादक– उग्रसेन भैयाजी डॉ. सुखदेव सिंह सेंगर प्रकाशक– श्री विजयरामदासजी महाराज अमृत महोत्सव एवं सनातन धर्म समिति, खनेता भिण्ड (म.प्र.) प्रथम संस्करण सन् अंकित नहीं।
9. मंदिर ट्रस्ट के अभिलेख एवं जैन मुनियों से भेंटवार्तानुसार।
10. जिला कलेक्टर कार्यालय एवं धार्मिक न्यास विभाग भिण्ड के रिकॉर्ड के आधार पर।